मौसम

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	30.0	22.8
डालटनगंज	31.9	24.8
धनबाद	30.6	25.5

तापमान डिग्री सेल्सियस में.

शुभम संदेश

रांची, शनिवार, 16 अगस्त 2025 I भाद्रपद कृष्ण पक्ष 06, संवत 2082 I रांची एवं पटना से प्रकाशित I वर्ष : 3, अंक : 130 I मूल्य ₹ 4, पृष्ठ संख्या : 12

नहीं रहे रामदास सोरेन

नई दिल्ली। झारखंड के स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता मंत्री, घाटशिला के विधायक और झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के वरिष्ठ नेता रामदास सोरेन का शुक्रवार देर रात दिल्ली के अपोलो अस्पताल में निधन हो गया. वह 62 वर्ष के थे. करीब दो सप्ताह से उनका इलाज दिल्ली के एक निजी अस्पताल में चल रहा था. उन्हें 2 अगस्त को गंभीर हालत में भर्ती कराया गया था. दरअसल, उसी दिन बाथरूम में फिसलकर गिरने से उनके सिर में गंभीर चोट लगी थी. चिकित्सकों के अनुसार उन्हें ब्रेन इंजरी हुई थी. हालत बिगड़ने पर उन्हें जमशेदपुर से राष्ट्रीय राजधानी के अस्पताल में एयरलिफ्ट किया गया था. इलाज के दौरान उन्हें मेदांता अस्पताल में भी भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टरों ने कुछ दिन पहले ही उन्हें ब्रेन डेड घोषित कर दिया था.

झामुमो के राष्ट्रीय प्रवक्ता कुणाल सारंगी ने जानकारी दी कि सिर में चोट लगने के बाद से उनकी स्थिति लगातार गंभीर बनी रही और उन्हें जीवन रक्षक प्रणाली पर रखा गया था.

रामदास सोरेन के निधन से झारखंड की राजनीति में गहरा शोक व्याप्त हो गया है. वह लंबे समय से झामुमो के सक्रिय और वरिष्ठ नेताओं में शामिल थे .

जन्म : 1 जनवरी 1963 - मृत्यु 15 अगस्त 2025

राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने पार्थिव शरीर पर पुष्पचक्र अर्पित कर दी श्रद्धांजलि

झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने आज झारखंड विधानसभा परिसर में माननीय मंत्री, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता तथा निबंधन विभाग, झारखण्ड सरकार रामदास सोरेन के पार्थिव शरीर पर पुष्पचक्र अर्पित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि रामदास सोरेन जी का असामयिक निधन राज्य के लिए अपूरणीय क्षति है ।राज्यपाल महोदय ने शोकाकुल परिजनों से भेंट कर अपनी संवेदनाए व्यक्त की और ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा परिजनों को इस कठिन समय में धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की

10 दिनों में झारखंड ने दो नायाब हीरा खो दिया

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन और मंत्री रामदास सोरेन के निधन से झारखंड सदमे में

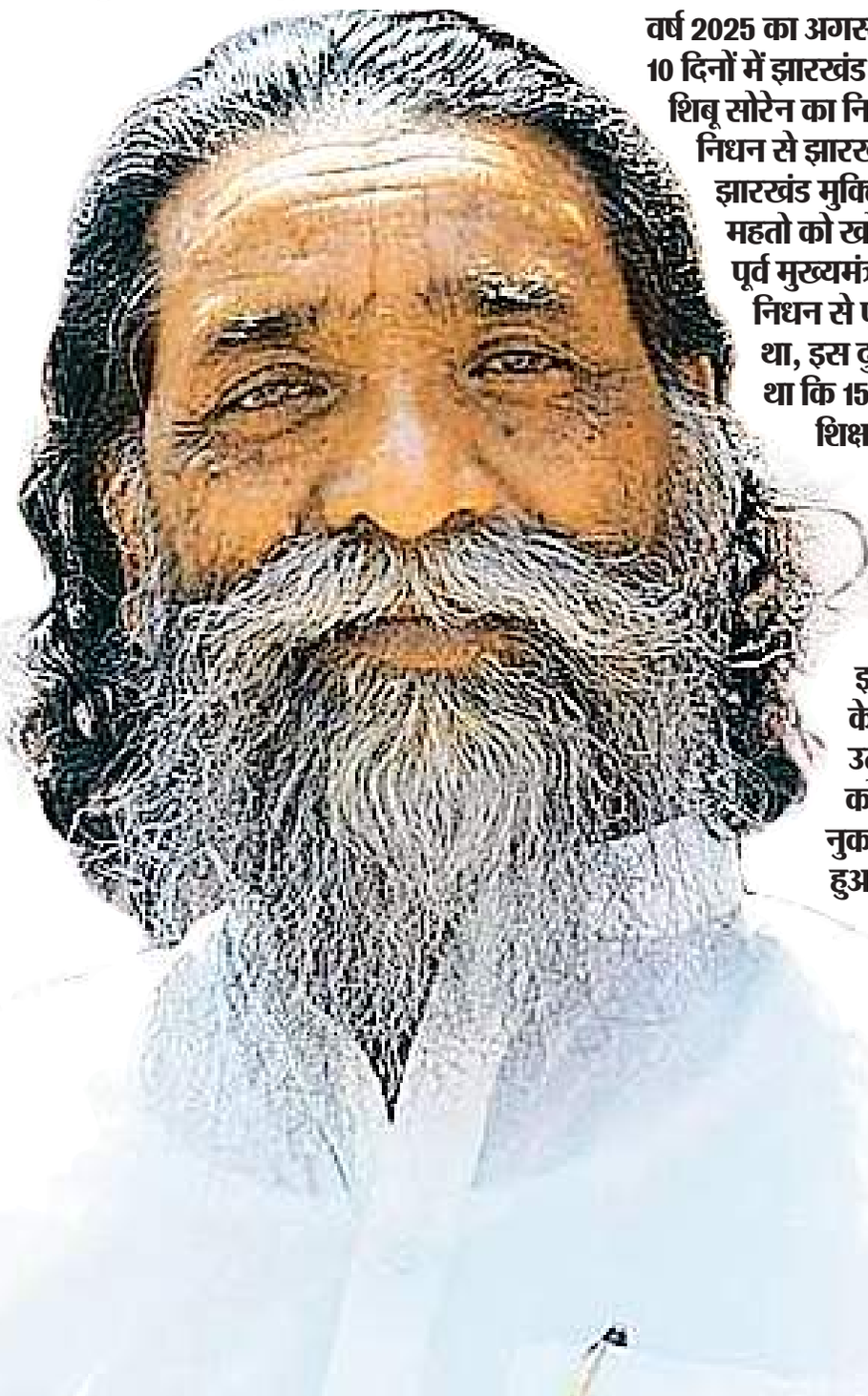

वर्ष 2025 का अगस्त महीना झारखंड के लिए दुःखद बन गया, जब 10 दिनों में झारखंड ने अपने दो सपूत खो दिए .दिशोम गुरु शिबू सोरेन का निधन और शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन के निधन से झारखंड सदमे में है, झारखंड और झारखंड मुक्ति मोर्चा पहले ही टाईगर जगरनाथ महतो को खो चुका है .5 अगस्त को झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री दिशोम गुरु श्री शिबू सोरेन के निधन से पूरा झारखंड दुखी था शोक में डूबा था, इस दुख से अभी झारखंड उबरा भी नहीं था कि 15 अगस्त 2025 को झारखंड के शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन के निधन की खबर से पूरा झारखंड मर्माहत हो उठा ,एक ओर दिशोम गुरु के निधन से झारखंड में एक युग का अंत हो गया, वहीं दूसरी ओर शिक्षा मंत्री के निधन से झारखंड में उनके द्वारा शिक्षा के प्रति किए जा रहे उत्कृष्ट प्रयासों को बड़ा नुकसान हुआ है .

ऐसे छोड़ कर नहीं जाना था रामदास दा... अंतिम जोहार दादा...

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन के निधन पर गहरा दुख जताया। उन्होंने सोशल मीडिया पर श्रद्धांजलि देते हुए लिखा – रएसे छोड़ कर नहीं जाना था रामदास दा... अंतिम जोहार दादा...। इससे पहले महीने की शुरुआत में सीएम के पिता और झामुमो के संस्थापन्क शिन्त सोरेन का भी निधन हुआ था।

झारखंड में शिक्षा मंत्री के निधन पर एक दिन का राजकीय शोक

शुभम संदेश। रांची

झारखंड के शिक्षा मंत्री और झामुमो के वरिष्ठ नेता रामदास सोरेन का निधन हो गया. उन्होंने 15 अगस्त को दिल्ली के अपोलो अस्पताल में अंतिम सांस ली. इस खबर की जानकारी झामुमो के पूर्व विधायक कुणाल षाड़ंगी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर दी. झारखंड के शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन का पार्थिव शरीर शनिवार सुबह रांची लाया गया. दिल्ली के एक अस्पताल में इलाज के दौरान उनका निधन हो गया था. एक अधिकारी ने बताया कि झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) नेता का पार्थिव शरीर दिल्ली से रांची के बिरसा मुंडा हवाई अड्डा लाया गया और इसे विधानसभा परिसर में रखा जाएगा जहां मंत्री, विधायक और नेता उन्हें श्रद्धांजलि देंगे. झामुमो और कांग्रेस के कई नेता हवाई अड्डे पहुंचे और पुष्पांजलि अर्पित की. झारखंड सरकार ने शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन के निधन पर शनिवार को एक दिन का राजकीय शोक घोषित किया. बयान के अनुसार, झारखंड में सभी इमारतों पर राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा और कोई भी आधिकारिक समारोह आयोजित नहीं किया जाएगा. बयान में कहा गया, ''राज्य सरकार ने मंत्री के सम्मान में 16 अगस्त को एक दिन का राजकीय शोक रखने का फैसला किया है.''

बाबू लाल मरांडी ने दी श्रद्धांजिल

62 वर्ष की उम्र में रामदास सोरेन का निधन, पढ़ाई-लिखाई से लेकर राजनीति तक ऐसा रहा सफर

शुभम संदेश। रांची

झारखंड के शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन का 62 वर्ष की उम्र में निधन हो गया. को-ऑपरेटिव कॉलेज, जमशेदपुर से स्नातक सोरेन ने शिक्षा सुधारों में अहम योगदान दिया. वे घाटशिला से लगातार तीसरी बार विधायक चुने गए थे और आदिवासी समाज के प्रखर नेता थे.

झारखंड के शिक्षा मंत्री और झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM) के वरिष्ठ नेता रामदास सोरेन का शुक्रवार को दिल्ली के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया. वह 62 वर्ष के थे. उनके निधन की पुष्टि पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता कुणाल सरांगी ने की. सरांगी ने बताया कि सोरेन की स्थिति गंभीर थी और उन्हें लाइफ सपोर्ट पर रखा गया था.

रामदास सोरेन को 2 अगस्त को जमशेदपुर से एयरलिफ्ट कर दिल्ली लाया गया था. उनके आवास के बाथरूम में गिरने से सिर और शरीर में गंभीर चोटें आई थीं. इसके बाद उन्हें तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां वरिष्ठ चिकित्सकों की एक टीम उनकी सेहत पर लगातार नजर रख रही थी.

शिक्षा से राजनीति तक का सफर

1 जनवरी 1963 को पूर्वी सिंहभूम जिले के घोराबांधा गांव में जन्मे रामदास सोरेन ने जमशेदपुर के को-ऑपरेटिव कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई की थी. शिक्षा के प्रति उनकी गहरी समझ और लगाव ने ही उन्हें झारखंड में शिक्षा सुधारों का मजबूत पैरोकार बनाया. मंत्री बनने के बाद उन्होंने सरकारी स्कूलों में पढ़ाई की गुणवत्ता सुधारने और आदिवासी अंचलों में शिक्षा का दायरा बढ़ाने पर विशेष जोर दिया. उनकी राजनीतिक यात्रा ग्राम प्रधान से शुरू हुई. घोराबांधा पंचायत के ग्राम प्रधान बनने के बाद वे लगातार जनता से जुड़े रहे और धीरे-धीरे राज्य की राजनीति में अपनी पहचान बनाई. शिक्षा मंत्री के रूप में वे न केवल नीति निर्माण में सक्रिय रहे, बल्कि स्वयं मैदान में उतरकर स्कूलों की स्थिति का जायजा लेते थे.

लगातार तीसरी बार विधायक

रामदास सोरेन घाटशिला विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे. 2024 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने भाजपा प्रत्याशी बाबूलाल सोरेन (पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन के पुत्र) को हराकर तीसरी बार जीत हासिल की थी.आदिवासी समाज की आवाज बनने वाले सोरेन को उनके जमीन से जुड़े स्वभाव और शिक्षा सुधारों के प्रति समर्पण के लिए हमेशा याद किया जाएगा.

राजनीतिक करियर की शुरुआत

रामदास सोरेन का राजनीति में कदम रखना कोई अचानक लिया गया फैसला नहीं था. उन्होंने युवावस्था से ही राजनीति में सक्रिय भूमिका निभानी शुरू कर दी थी. उनका असली राजनीतिक सफर तब शुरू हुआ जब वे झारखंड आंदोलन में शिबू सोरेन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उतरे. झारखंड राज्य की मांग को लेकर हुए आंदोलन में वे न सिर्फ सक्रिय रहे, बल्कि कई बार जेल भी गए. यही आंदोलन उनके लिए राजनीतिक जीवन की नींव साबित हुआ.

पहला चुनाव और शुरुआती झटका

2005 में रामदास सोरेन ने पहली बार निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर घाटशिला विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा. हालांकि, यह चुनाव उनके लिए जीत की बजाय अनुभव लेकर आया. वे हार गए, लेकिन इस हार ने उन्हें मजबूत बनाया और राजनीति में टिके रहने का जज्बा दिया.

पहली जीत और विधानसभा में एंट्री

2009 में रामदास सोरेन ने झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) का दामन थामा और घाटशिला से चुनाव मैदान में उतरे. इस बार जनता ने उन्हें अपना प्रतिनिधि चुना और वे पहली बार विधायक बने. यही से उनका राजनीतिक करियर रफ्तार पकड़ने लगा.

2014 की हार और 2019 की वापसी

2014 विधानसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी लक्ष्मण टुडू ने उन्हें हरा दिया. यह हार उनके लिए एक बड़ा झटका थी, लेकिन उन्होंने हार मानने के बजाय जनता से जुड़ाव और संगठन में काम पर ज्यादा ध्यान दिया.

2019 में उन्होंने एक बार फिर घाटशिला से चुनाव लड़ा और शानदार वापसी करते हुए दूसरी बार विधानसभा पहुंचे. हालांकि, इस बार भी उन्हें कैबिनेट में जगह नहीं मिली.

2024 में मंत्री पद की शपथ

2024 का विधानसभा चुनाव रामदास सोरेन के लिए खास रहा. उन्होंने न केवल जीत दर्ज की, बल्कि हेमंत सोरेन के नेतृत्व वाली सरकार में मंत्री पद की शपथ भी ली. पहले चंपाई सोरेन के इस्तीफे के बाद उन्हें जल संसाधन मंत्री बनाया गया था, और हेमंत 2.0 कैबिनेट में उन्हें स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग और निबंधन मंत्री का जिम्मा सौंपा गया है.

संथाल समुदाय से जुड़ाव

रामदास सोरेन संथाल आदिवासी समुदाय से आते हैं. संयोग से चंपाई सोरेन भी इसी समुदाय के हैं, और दोनों के बीच राजनीतिक व व्यक्तिगत नजदीकियां भी रही हैं. आदिवासी समाज में उनकी लोकप्रियता उनकी जमीनी छवि और वर्षों के संघर्ष का नतीजा है.

व्यक्तिगत परिचय

रामदास सोरेन का जन्म 1 जनवरी 1963 को एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था. उन्होंने स्नातक तक की पढ़ाई की है. राजनीति में सक्रिय होने के साथ-साथ वे झामुमो संगठन में भी अहम जिम्मेदारियां निभा चुके हैं. वे झामुमो के पूर्वी सिंहभूम जिला अध्यक्ष भी रह चुके हैं.

वे तीन बार (2009, 2019, 2024) विधायक चुने जा चुके हैं और झामुमो प्रमुख शिबू सोरेन को अपना आदर्श मानते हैं.

नेतृत्व क्षमता और भविष्य

रामदास सोरेन को एक जमीनी नेता माना जाता था, जो सीधे जनता के बीच जाकर उनकी समस्याएं सुनते और सुलझाने की कोशिश करते हैं. आदिवासी अधिकारों की लड़ाई हो या विकास के मुद्दे, वे हमेशा सक्रिय रहे हैं.

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि हेमंत सोरेन के मंत्रिमंडल में उनकी एंट्री न केवल संथाल आदिवासी समाज को राजनीतिक संदेश है, बल्कि पूर्वी सिंहभूम में झामुमो की पकड़ को और मजबूत किया था. आंदोलन की आग से तपकर निकले और तीन बार विधानसभा पहुंचे रामदास सोरेन का राजनीतिक सफर संघर्ष, जनता के साथ जुड़ाव और नेतृत्व क्षमता की कहानी है. जब मंत्री पद की जिम्मेदारी सम्भाला तब जनता और पार्टी की उम्मीदें उनसे बढ़ी लेकिन सोरेन के आकस्मिक निधन से लोग सदमे में हैं.

रामदास सोरेन का अंतिम संस्कार आज घाटशिला में

झारखंड के शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन का पार्थिव शरीर दिल्ली से रांची लाया गया । बिरसा मुंडा एयरपोर्ट पर पहुंचने के बाद इसे विधानसभा ले जाया गया जहाँ श्रद्धांजलि दी जा रही है। फिर पार्थिव शरीर को घाटशिला-मऊभंडार ताम्र प्रतिभा मैदान में अंतिम दर्शन के लिए रखा जाएगा। उनका अंतिम संस्कार घोरबाधा स्थित पैतृक गांव में होगा। मऊभंडार में शोकसभा की तैयारी चल रही है।

चंपाई सोरेन के बीजेपी में चले जाने पर जेएमएम को मिला था दूसरा 'टाइगर'

नई दिल्ली/रांची। जब पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने JMM से इस्तीफा देकर बीजेपी का दामन थामा, तो झारखंड मुक्ति मोर्चा को एक बड़ा झटका लगा—विशेषकर कोल्हान क्षेत्र में जहां उन्हें 'कोल्हान टाइगर' के रूप में जाना जाता था

इसी राजनीतिक संकट में पार्टी और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने रामदास सोरेन को अपना नया 'टाइगर' बना दिया।

कैबिनेट में बदलाव का तात्कालिक कारण

चंपाई सोरेन का बीजेपी में शामिल होना

चंपाई सोरेन ने अपने मंत्री पद और विधान सभा सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था और उसी दिन बीजेपी जॉइन कर ली इससे सरकार में एक महत्वपूर्ण सीट खाली हो गई।

इसी राजनीतिक गुटबाजी और वैकेंसी को भरने के तौर पर हेमंत सोरेन ने घाटशिला विधायक रामदास सोरेन को कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ दिलाई। उन्होंने चंपाई सोरेन के स्थान पर कई विभाग—जैसे जल संसाधन, उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा—की जिम्मेदारी संभाली

राजनीतिक रणनीतिः कोल्हान में जेएमएम की पकड़ मजबूत करना

कोल्हान क्षेत्र (जिसमें चंपाई का गढ़ शामिल था) में जेएमएम का प्रभाव बनाए रखना हेमंत सरकार की रणनीति का अहम हिस्सा था। रामदास सोरेन को यह जिम्मेदारी विशेष महत्ता के साथ दी गई ताकि कोल्हान में पार्टी की सत्ता और लोकप्रियता बना रहे । जेएमएम के अंदरूनी सूत्रों के अनुसार, यह कदम संदेश था कि "कोल्हान में जेएमएम की सत्ता और नेतृत्व को जारी रखा जाएगा," खासकर तब जब चंपाई सोरेन जैसे पुराने नेताओं का पार्टी छोड़ना आसान नहीं था इस प्रकार, चंपाई सोरेन के इस्तीफे और बीजेपी में जाने के पश्चात जेएमएम ने अपना नया 'टाइगर' तैयार किया—रामदास सोरेन। यह एक सुनियोजित राजनीतिक कदम था, जिसके माध्यम से पार्टी ने न केवल खाली पद को भरा, बल्कि कोल्हान क्षेत्र में अपनी पकड़ को भी बरकरार रखा।

रामदास सोरेन के निधन से राजनीतिक जगत में शोक की लहर

झारखंड के स्कूली शिक्षा व निबंधन मंत्री और घाटशिला विधानसभा क्षेत्र के विधायक रामदास सोरेन का शुक्रवार को दिल्ली के इंद्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल में निधन हो गया। 62 वर्षीय झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के वरिष्ठ नेता दो अगस्त को अपने जमशेदपुर स्थित आवास के बाथरूम में फिसलकर गिर गए थे, जिसके कारण उनके सिर में गंभीर चोट लगी और मस्तिष्क में रक्तस्त्राव (ब्रेन हेमरेज) हुआ। इसके बाद उन्हें तत्काल टाटा मोटर्स अस्पताल में भर्ती कराया गया और फिर बेहतर इलाज के लिए एयर एंबुलेंस के जरिए दिल्ली के अपोलो अस्पताल ले जाया गया। वहां 13 दिनों तक जीवन रक्षक प्रणाली (लाइफ सपोर्ट) पर रहने के बावजूद उनकी स्थिति में सुधार नहीं हुआ और अंततः उन्होंने दम तोड़ दिया। झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय प्रवक्ता कुणाल षाड़ंगी ने एक्स पर एक भावुक पोस्ट में उनके निधन की पुष्टि करते हुए कहा, ₹उनके लाखों चाहने वालों, शुभचिंतकों, कर्मठ कार्यकर्ताओं, स्कूली शिक्षा व निबंधन विभाग के सहयोगियों और हम सबके लिए यह एक व्यक्तिगत और अपूरणीय क्षति है। उन्होंने अस्पताल के चिकित्सकों और स्वास्थ्य कर्मियों का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने सोरेन को बचाने के लिए दिन-रात प्रयास किया।₹

शोक की लहर और नेताओं की प्रतिक्रिया

रामदास सोरेन के निधन की खबर से झारखंड की राजनीति और उनके गृह क्षेत्र घाटशिला में शोक की लहर दौड़ गई। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा, रामदास सोरेन का जाना झारखंड के लिए अपूरणीय क्षति है। वे एक जमीन से जुड़े नेता थे और शिक्षा के विकास के लिए हमेशा समर्पित रहे।₹

पूर्व केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने भी उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की थी और कहा था कि उन्होंने अपोलो अस्पताल के निदेशक से बात कर बेहतर इलाज सुनिश्चित किया। स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी ने एक्स पर लिखा, ₹हमारे बड़े भाई रामदास सोरेन की हालत गंभीर थी, लेकिन हमने उम्मीद नहीं छोड़ी थी। उनका जाना एक बड़ा नुकसान है। घाटशिला के पूर्व विधायक सह कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. प्रदीप कुमार बलमुचू ने कहा कि ये अत्यंत दुखद समाचार है। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। शोकाकुल परिवार को भगवान इस कठिन समय में धैर्य प्रदान करे।

जमशेदपुर लोकसभा के सांसद विद्युत वरण महतो ने कहा कि झारखंड के शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन के निधन के समाचार से गहरा दुख हुआ। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिजनों, सहयोगियों और समर्थकों को यह दुख सहने की शक्ति दें। राज्य की शिक्षा व्यवस्था और जनसेवा के क्षेत्र में उनका योगदान अमूल्य रहा है, जिसे झारखंड सदैव याद रखेगा।झारखंड के गवर्नर ने X पर लिखा, ₹स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता मंत्री श्री रामदास सोरेन जी के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर मैं अत्यंत मर्माहत हूँ। उनका जाना राज्य के लिए एक अपूरणीय क्षति है। मैं शोकाकुल परिजनों के प्रति गहरी संवेदनाएं प्रकट करता हूं। ईश्वर उन्हें इस पीड़ा को सहने की शक्ति प्रदान करें।

अंतिम संस्कार की तैयारियां

परिवार और पार्टी सूत्रों के अनुसार, रामदास सोरेन के पार्थिव शरीर को रांची लाया जाएगा, जहां अंतिम दर्शन के लिए रखा जाएगा। इसके बाद उनके पैतृक गांव घोड़ाबांधा से अंतिम संस्कार किया जाएगा

झारखंड की राजनीति पर प्रभाव

रामदास सोरेन का निधन झामुमो और झारखंड की राजनीति के लिए एक बड़ा झटका है। खासकर कोल्हान क्षेत्र में उनकी मजबूत पकड़ और जनता के बीच लोकप्रियता ने उन्हें एक महत्वपूर्ण नेता बनाया था। चंपाई सोरेन के भाजपा में शामिल होने के बाद झामुमो ने उन्हें कोल्हान में बड़ा नेतृत्व सौंपा था, जिसे अब भरना चुनौतीपूर्ण होगा। राज्य भर में उनके चाहने वालों और कार्यकर्ताओं ने उनके निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। उनके योगदान को शिक्षा और सामाजिक विकास के क्षेत्र में हमेशा याद रखा जाएगा। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।